Dated 18/8/2020

B.A Part I (H. Subsi) Philosophy

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज, बिरौल, दरभंगा

योग दर्शन में समाधि की व्याख्या करें ?

Ans. योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। योग-दर्शन के अनुसार समाधि की अवस्था प्राप्त होने के बाद 'चित्तवृत्ति का पूर्णतः निरोध' हो जाता है। योग-दर्शन में वर्णित अष्टांग योग प्रथमतः पाँच अंगों को बहिरंग साधन और अंतिम तीन को अतरंग साधन कहा गया है। योग-दर्शन में समाधि के दो प्रकार बताये गये हैं- वे हैं:- (I) सम्प्रज्ञात समाधि तथा (II) असम्प्रज्ञात समाधि।

योग में सम्प्रज्ञात-समाधि को सबीज समाधि भी कहा जाता है। योग-दर्शन के अनुसार सम्प्रज्ञात समाधि के चार प्रकार बतलाये गये हैं वे हैं:- (1) सवितर्क (2) सविचार (3) सानन्द तथा (4) सास्मित। योग दर्शन में असम्प्रज्ञात समाधि दो प्रकार के बतलाये गये हैं वे हैं:- (1) भव प्रत्यय (2) उपाय प्रत्यय। असम्प्रज्ञात समाधि को निर्बीज समाधि कहा गया है। योग-दर्शन में योगाभ्यास के फलस्वरूप योगियों में असाधारण एवं अनुपम आठ शक्तियों के मिलने की बात भी कही गई है। योग-दर्शन एक ईश्वरवादी दर्शन है। पतंजलि ने ईश्वर का लक्षण बतलाते हुए कहा है कि- "क्लेश, कर्म, विपाक (कर्मफल) और आशय संस्कार से सर्वथा अस्पृष्ट पुरुष-विशेष ईश्वर है।" ईश्वर को नित्य मुक्त माना गया है गुरुओं का भी गुरु है। योग प्रतिपादित ईश्वर एक विशेष पुरुष हैं। वह जगत का कर्त्ता, संहर्त्ता या नियन्ता नहीं है। उनका कार्य केवल अपने भक्तों के समाधि पथ में आने वाले विघ्न को दूर करके समाधि सिद्धि को संभव बना देना है।

—x—